स्नातकोत्तर द्वितीय सत्रार्द्ध
हिन्दी विभाग
पत्र सं०:- 06

मीरा की भक्ति भावना

मीरा भक्ति काल की प्रमुख कवयित्री एवं कृष्ण की अनन्य उपासिका थीं। उनका जन्म 'मेड़ता' के समीपी गाँव 'कुड़की' में राठौर वंश की मेड़तिया शाखा में हुआ था। इस शाखा के प्रवर्तक राव दूदा जी थे। मीरा का जन्म उन्हीं के सबसे छोटे पुत्र राव रतन सिंह के घर हुआ। उनका विवाह चित्तौड़ के सिसोदिया वंशीय राणा सांगा के ज्येष्ठ पुत्र भोजराज के साथ हुआ।

मीरा बचपन से ही कृष्ण भक्त थी। पति की मृत्यु के उपरान्त वह कृष्ण भक्ति में इस प्रकार लीन हुई कि साधु-संतों के साथ बैठकर भजन-कीर्तन करने लगीं और करताल बजाकर नाचने लगी। उनका उनका यह व्यवहार परिवार के लोगों को स्वीकार्य नहीं था। राणा विक्रमादित्य इससे बहुत रुष्ट थे। उन्होंने मीरा को कई प्रकार की यातनाएँ दी जिससे वह कृष्ण भक्ति छोड़ दे, परन्तु मीरा यातनाएं सहन करके भी कृष्ण भक्ति में ही लीन रहीं।

मीरा ने कृष्ण की भक्ति माधुर्य भाव से की है। इसमें भक्त परमात्मा की उपासना पति या प्रियतम के रूप में करता है। मीरा कहती है -

"मेरे तो गिरधर गोपाल, दूसरे न कोई
जा के सिर मोर मुकुट, मेरी पति सोई"

मीरा के काव्य में शृंगार के दोनों पक्ष के दर्शन होते हैं। संयोग शृंगार के पद बहुत कम हैं, परन्तु वियोग शृंगार सर्वत्र विद्यमान है। वस्तुतः मीरा एक विरहिणी के रूप में हमारे सामने उपस्थित होती है। कृष्ण प्रेम में अनुरक्त मीरा का हृदय अपने प्रियतम से मिलन के लिए अत्यन्त व्याकुल थी।

विरह की गंभीरता से मीरा गीत काव्य अत्यन्त उत्कृष्ट हैं। उनके पदों में अपूर्व भाव-विह्वलता और आत्म-समर्पण का भाव है। विरह की जैसी तीव्र अनुभूति उनके पदों में प्राप्त होती है वैसी अन्यत्र दुर्लभ है। वस्तुतः प्रेम उन्मादिनी मीरा का एक पद उनके हृदय की इस आकुलता का परिचायक है। विरहीनी मीरा का मन लगातार अपने प्रियतम का मुख देखने के लिए लालायित रहती है। उनके दर्शन के लिए वे इतनी व्याकुल है कि अपने भवन पर खड़ी होकर निरंतर महल की ओर आनेवाले पथ को निहारती रहती है - 'कब की ठाढी पंथ निहारूँ, अपने भवन खड़ी।'

मीरा कहती है कि जिस प्रकार चातक पक्षी वर्षा ऋतु के बादल के बिना व्याकुल रहता है और मछली पानी के बिना तड़पती रहती है, उसी प्रकार मैं भी विरह से व्याकुल होकर सुध-बुध खो बैठी हूँ -

"ज्यों चातक घन को रटें, मछली जिमि पानी हो
मीरा व्याकुल विरहिनी, सुध बुध बिसरानी हो"

मीरा का सम्पूर्ण काव्य आत्म व्यंजक काव्य है। जीवन के उतार चढ़ाव, सुख-दुख आदि का मीरा ने मार्मिक वर्णन किया है, उनके काव्य में उनकी व्याकुलता और वेदना निश्छल अभिव्यक्ति पाती है। प्रेम से उत्पन्न पीड़ा का वर्णन करती हुई मीरा कहती हैं:-

"दरद की मारी बन बन डोलूँ, बैद मिला नहीं कोय
मीरां की प्रभु पीर मिटेगी, जब बैद संवलिया होय"

मीरा कहती है कि वे प्रेम दिवानी है और उनका दर्द उनके अलावा कोई और नहीं समझता :-

"हेरी, मैं तो प्रेम दीवानी, मेरा दरद न जाने कोय"

नारी होने के कारण मीरा की तन्मयता और विरह भावना कुछ अपने-आप से प्रामाणिक लगती है, उनके पदों का भाषिक गठन उतना सशक्त नहीं है

इस प्रकार निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि मीरा के पदों में उनका विरहिनी रूप अधिक मार्मिक बन पड़ा है। अपने सरल और निश्छल प्रेम की अभिव्यक्ति में वे अद्वितीय हैं। प्रेम हृदय की छटपटाहट को उनके काव्य में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। कृष्ण भक्ति में उन्होंने अपना सर्वस्व उन पर न्यौछावर कर दिया है।

प्रस्तुतकर्ता

बेनाम कुमार

(अतिथि शिक्षक)

हिन्दी विभाग

राजनारायण महाविद्यालय हाजीपुर

(BRABU MUZAFFARPUR)

मो० नं० - 8292271041

ईमेल — benamkumar13@gmail.com

दिनांक

08/08/2020